(i) **Printed Pages : 4** **Roll No. .....**

(ii) **Questions : 14** **Sub. Code :** 0 0 1 1

Exam. Code : 0 0 0 1

B.A./B.Sc. (General) 1st Semester

(1129)

SANSKRIT (Elective)

Paper–Katha, Niti Evem Vyakaran

Time Allowed : Three Hours] **[Maximum Marks : 90**

नोट :— **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं। किसी भी प्रश्न के सभी उपभागों के उत्तर नैरन्तर्य से लिखें।

I. अधोलिखित में से किसी **एक** गद्यांश का सप्रसंग अनुवाद करें :—

(क) कस्मिंश्चिदधिष्ठाने चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः परस्परं मित्रभावमुपगता वसन्ति स्म। तेषां त्रयः शास्त्रपारङ्गताः, परन्तु बुद्धिरहिताः। एकस्तु बुद्धिमान् केवल शास्त्रपराङ्मुखः। अथ तैः कदाचिन्मित्रैर्मन्त्रितं — "को गुणो विद्यायाः, येन देशान्तरं गत्वा भूपतीन् परितोष्याऽर्थोपार्जना न क्रियते। तत्पूर्वदिशं गच्छामः।

(ख) अथ तस्यां गतायां, पृष्ठे ब्राह्मणोऽपि, शून्यं गृहं मुक्त्वा भिक्षार्थं क्वचिन्निर्गतः। अत्रान्तरे दैववशात् कष्णसर्पो बिलान्निष्क्रान्तः। नकुलोऽपि तं स्वभाववैरिणं मत्वा, भ्रातू रक्षणार्थं सर्पेण सह युद्ध्वा, सर्पं खण्डशः कृतवान्।

(ग) अथ तस्य स्वप्ने पद्मनिधिः क्षपणकरूपो दर्शनं दत्त्वा प्रोवाच — "भोः श्रेष्ठिन् ! मा त्वं वैराग्यं गच्छ। अहं पद्मनिधिस्तव पूर्वपुरुषोपार्जितः। तदनेनैव रूपेण प्रातः त्वद्गृहमागमिष्यामि। तत्त्वयाऽहं लगुडप्रहारेण शिरसि ताडनीयः, येन कनकमयो भूत्वाऽक्षयो भवामि।'' 1×5=5

C4KNOWLEDGE SEEKERS

Scanned with CamScanner

II. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या करें :—

(क) क्लेशस्याऽङ्गमदत्त्वा सुखमेव सुखानि नेह लभ्यन्ते।

(ख) व्याधितेन सशोकेन चिन्ताग्रस्तेन जन्तुना।
कामार्तेनाऽध मत्तेन दृष्टः स्वप्नो निरर्थकः।।

(ग) शूरः सुरूपः सुभगश्च वाग्मी,
शस्त्राणि शास्त्राणि विदांकरोतु।
अर्थं विना नैव यशश्च मानं,
प्राप्नोति मर्त्योऽत्र मनुष्यलोके।।

(घ) पुत्रगात्रस्य संस्पर्शश्चन्दनादतिरिच्यते। 2×5=10

III. "श्रेष्ठि-मणिभद्र-क्षपणक-कथा" अथवा "ब्राह्मणी-नकुल-कथा" का सार अपने शब्दों में लिखें। 1×5=5

IV. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या करें :—

(क) लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजन चित्तमाराधयेत्।

(ख) दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे।।

(ग) सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी प्रसादोन्मुखः
स्निग्धं मित्रमवञ्चकः परिजनो निःक्लेशलेशं मनः।
आकारो रुचिरः स्थिरश्च विभवो विद्यावदातं मुखं
तुष्टे विष्टपकष्टहारिणि हरौ सम्प्राप्यते देहिना।।

(घ) वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि।। 2×5=10

C4KNOWLEDGE SEEKERS

Scanned with CamScanner

V. अधोलिखित में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या करें :—

(क) न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्।

(ख) विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं ...।

(ग) सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्। 1×5=5

VI. अधोलिखित में से किन्हीं **दस** व्यवहारिक शब्दों को संस्कृत में लिखें :—

भौं, अंजीर, टिंडा, साग, माथा, अंगूर, ओठ, घुटना, बेर, गोभी, अमरूद, लीची, जामून, कान, मूली। 10×1=10

VII. अधोलिखित में से किन्हीं **चार** वर्णों के उच्चारण स्थान लिखें :—

थ्, ह्, झ्, ऋ, श्, ओ, अनस्वार, ब्। 4×1=4

VIII. अधोलिखित में से किन्हीं **पाँच** अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करें :—

यदा, ततः, सर्वत्र, तथा, यत्र, कुतः, अत्र, यथा, अन्यत्र। 5×1=5

IX. अधोलिखित में से किन्हीं **पाँच** गणनावाची अंकों को संस्कृत में लिखें :—

3, 7, 12, 23, 30, 34, 43, 44, 46, 50 5×1=5

X. भारतीय पंचांग के अनुसार 'योगों' अथवा 'वारों' के नाम लिखिए। 5

XI. अधोलिखित में से किन्हीं **पाँच** में सन्धि करें :—

इति + आदि, विद्या + अर्थी, राम + ईश्वरः, हित + उपदेशः, देव + ऋषिः, अनु + एषणम्, गै + अकः, शे + अनम्, ते + अत्र, तथा + एव! 5×1=5

C4KNOWLEDGESEEKERS

Scanned with CamScanner

XII. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** शब्दों के रूप सभी विभक्तियों तथा वचनों में लिखें

राम, मति, नदी, फल। 2×4=8

XIII. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** धातुओं के रूप यथानिर्दिष्ट लकारों में लिखें :—

√क्रीड़ — लङ् लकार, √पठ् — लृट् लकार

√पा — लोट् लकार, √गम् — लट् लकार 2×4=8

XIV. अधोलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें :—

(i) वह बोलता है।

(ii) मैं पढ़ता हूँ।

(iii) सीता कहाँ जा रही है ?

(iv) चोर को धिक्कार है।

(v) वे दोनों जल पीते हैं।

(vi) राम कहाँ से आ रहा है ?

(vii) जैसा राजा वैसी प्रजा।

(viii) तुम सब खेलते हो।

(ix) हम दोनों को अब पढ़ना चाहिए।

(x) वहाँ नहीं जाना चाहिए। 5×1=5

C4KNOWLEDGE SEEKERS

Scanned with CamScanner